IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास का प्रभाव

डॉ. मान सिंह

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान

राजकीय कन्या महाविद्यालय

गुड़ा, नीमकाथाना

शोध सारांश

प्रौद्योगिक परिवर्तन, खनिजों की तुलनात्मक महत्ता व तेल संकट ने तेल उत्पादक देशों के महत्व को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में स्थापित किया किन्तु खनिज तेल का विकल्प प्राप्त हो जाने पर इनका महत्व कम हो जायेगा। इसी तरह जनसंख्या जो कभी शक्ति का महत्वपूर्ण स्त्रोत होती थी अब अकेले ही शक्ति का स्त्रोत नहीं बन सकती। बल्कि अत्यधिक जनसंख्या वास्तव में राष्ट्र की शक्ति के लिये अवरोध सिद्ध होती है। भारत की जनसंख्या जीवनयापन के लिये ही पूंजी उपयोग कर लेनी है और औद्योगिक प्रसार व निवेश के लिये पूंजी संचय के अवसर समाप्त कर देती है । पूर्व में अधिक जनसंख्या बड़ी सेनायें बनाने के लिये आवश्यक थी, किन्तु प्रौद्योगिकी ने सामूहिक संहार कर सकने वाले अस्त्र शस्त्र विकसित कर दिये हैं जैसे– प्रक्षेपास्त्र, परमाणु बम, गनपाऊडर इत्यादि। अत अब सुरक्षा के इस कार्य के लिये भी जनसंख्या की अधिक आवश्यकता नहीं है। अत मात्र अधिक जनसंख्या नहीं वरन् संसाधन जनसंख्या व प्रौद्योगिकी के बीच आनुपातिक संबंध रखने वाले देश ही प्रभावपूर्ण हो सकते हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जनसंख्या, सुरक्षा एवं आर्थिक विषयों में भी परिवर्तन का कारण है। इसके अतिरिक्त जहां पूर्व में भी परिवर्तनों की दर धीमी रही, एक परिवर्तन के बाद दूसरे परिवर्तन में लंबा समय लगा और व्यक्ति प्रकृति से अनुकूलन बैठाता रहा। प्रौद्योगिकी ने परिवर्तन की दर को भी तीव्र कर दिया। आज एक दशक या उससे भी कम समय में महत्वपूर्ण परिवर्तन संभव है। अतरू विज्ञान व प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरुकता, प्रौद्योगिकी की प्राप्तता एवं ग्राहयता तेजी से परिवर्तन हो सकने वाले परिदृश्य में अत्यावश्यक है, ताकि अस्तित्व रक्षा की जा सके एवं कार्य कुशलता भी बनायी रखी जा सके। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास एवं परिवर्तन का अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संबंधों के प्रत्येक पक्ष पर प्रभाव होता है, चाहे वह व्यापार वार्ता हो अथवा सैनिक सुरक्षा का विषय विश्व राजनीति में राज्यों का स्तरीकरण प्रौद्योगिकी के स्तर के अनुरूप ही होता है।

शब्द कुजी :– प्रौद्योगिक, परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधन, अंतर्राष्ट्रीय, राजनीति, विज्ञान, सांस्कृतिक।

अध्ययन के उदेद्श्य

1. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास और उसके अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. राज्य की शक्ति पर विज्ञान व प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्रौद्योगिकी के अविराम उपयोग से उत्पन्न विश्व समस्याओं का अध्ययन करना।
4. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बढ़ते महत्व व उससे राज्यों के संबंधों के बनते प्रतिमान का अध्ययन करना।
5. प्रौद्योगिकी एवं अंतर्निर्भरता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण

भारत में स्थानीय स्वशासन और ग्रामीण विकास का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इन्टरनेट आदि से इकट्टा किया गया है।

प्रस्तावना

वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी परिवर्तन मानवीय सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। प्रौद्योगिकी की गुणवत्ता एवं उससे प्राप्त उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के विश्लेषण में भी एक प्रमुख कारक है। व्यक्ति के जीवन स्तर का प्रश्न हो या तथ्य की क्षमताओं का प्रश्न, उसका सीधा संबंध प्राप्त प्रौद्योगिकी व उसकी गुणवत्ता से हुआ है। पाषाण युग से लेकर परमाणु युग तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के नित नये प्रयोगों ने प्रकृति को नियंत्रित कर सकने एवं समय व स्थान पर अधिकार कर सकने की मानवीय क्षमताओं में भी अत्यधिक वृद्धि की है। क्योंकि राज्य की सैनिक, आर्थिक व व्यापारिक क्षमताओं एवं विश्व छवि राज्य को प्राप्त प्रौद्योगिकी की गुणवत्ता के स्तर पर निर्भर हैं । विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकास ने राष्ट्र राज्य, राष्ट्र निर्माण, राज्य की क्षमता एवं शक्ति, अन्य राष्ट्रों से उसके संबंध, उन राष्ट्रों से संबंधों के विषय क्षेत्र, परंपरागत विदेशनीति के विषय क्षेत्र, विदेश नीति संचालन एवं राजनय इत्यादि की पद्धतियों को अत्यधिक प्रभावित किया है। बीसवीं शताब्दी में प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रभाव ने अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को प्रभावित कर एक ऐसी प्रवृत्ति को जन्म दिया है जिसमें व्यक्तियों में अधिक समीपता, आर्थिक सांस्कृतिक संबंध एवं सुरक्षा के लिये दूरस्थ समूहों से अधिक संपर्क व उन पर निर्भरता. सैनिक–आर्थिक एवं प्रोपेगेण्डा प्रहारों से अधिक भेदना विशाल किन्तु संख्या में कम राजनीतिक समूहों में आवद्धता, प्रौद्योगिक संस्थानिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों की तीव्रता, ग्रंथाओं, परंपराओं या चेतना के बजाय अभिमतों से निर्देशित व्यवहार आदि के प्रति आसक्ति दिखाई देती है। इसके परिणामस्वरूप विश्व सिकुड़झ या सिमट प्रतीत होता है, और बीसवीं शताब्दी का मानव विश्व ग्राम या भूमंडलीय ग्राम का निवासी अधिक प्रतीत होता है। प्रौद्योगिकी के प्रभावस्वरूप गैर राजनीतिक तत्वों की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रधानता बढ़ी है राजनीति का प्रभाव भी व्यापक हुआ है।

प्रौद्योगिकी अर्थ

प्रौद्योगिकी का अर्थ मानवीय कौशल या तकनीक को मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्रयुक्त किया जाना मानते हैं। अधिक स्पष्ट रूप से प्रौद्योगिकी भौतिक व जीव विज्ञान को अभियांत्रिकी व औद्योगिकी क्षेत्र में प्रयुक्त किया जाना है सैद्धान्तिक ज्ञान को व्यवहार में परिवर्तन कर ही इसका उपयोग मानव द्वारा संभव होता है । यही कारण है कि शुद्ध विज्ञान की अपेक्षा प्रौद्योगिकी को अधिक महत्व प्राप्त है। विज्ञान का प्रभाव समाज प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही अनुभव कर सकता है एवं उद्योग, कृषि या अन्य क्षेत्रों में वैज्ञानिक अविष्कार का प्रयोग प्रौद्योगिकी के रूप में ही लेता है। राज्य भी इसका उपयोग कर सकता है। प्रसिद्ध विज्ञान शीलिंग ने भी स्पष्ट किया है, कि राज्य की शक्ति किसी विशिष्ट वैज्ञानिक अविष्कार से नहीं बल्कि समेकित वैज्ञानिक ज्ञान से पुष्ट होती है जिस प्रसर सैनिक शक्ति की अति अथवा प्रभात स्थायी सेना के अतिरिक्त अन्य साधनों को मिलाकर होती है। राज्य भी वैज्ञानिक प्रतिष्ठा का उपयोग प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही राजनीतिक लाभ प्राप्त करने में कर सकता है। प्रौद्योगिकी शक्ति के तत्व के रूप में एवं राजनीतिक उपकरण के रूप में राज्य द्वारा प्रयोग की जाती है। राज्य इनका उपयोग कर प्रभाव विस्तार कर सकता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रभाव

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और विशेषकर प्रौद्योगिकी विश्व राजनीति ले प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक बन चुका है और इसका महत्व इक्कीसवीं शताब्दी में और अधिक बढ़ जाने की संभावना है। राज्य एवं राज्यों के मध्य संबंधों पर तीन प्रौद्योगिकीय विकास ने अधिक प्रभाव डाल विश्व राजनीति को प्रभावित किया है। वे हैं संचार प्रौद्योगिकी, औद्योगिक – प्रौद्योगिकी का विस्तार एवं प्रसार तथा सैन्य प्रौद्योगिकी। इन विकासों के फलस्वरूप राज्य, राज्य का स्वरूप एवं उसकी शक्ति में परिवर्तन आया है। राज्य की शक्ति के परंपरागत भौगोलिक तत्व अब उतने महत्वपूर्ण नहीं रह गये हैं। प्रौद्योगिकी द्वारा शक्ति के तत्व के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया गया है। इसकी प्राप्यता व प्राप्ति की इच्छा ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नये आयामों नये विषयों व नयी समस्याओं को जन्म दिया है ।

प्रौद्योगिकी एवं शक्ति

प्रौद्योगिकी ने जनसंख्या, क्षेत्रफल दूरी सहित अनेक भौगोलिक कारकों के महत्व में कमी ला दी है। दूरी की भौगोलिक संकल्पना व उसकी पारंपरिक अवधारणाओं में परिवर्तन हो गया है। विशेषकर परमाणु क्षेत्र में जहां स्वातजिक सैनिक सुरक्षा संभव नहीं है । शत्रु के पास अथवा दूर स्थित होने के संदर्भ महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि परमाणु अस्त्रों की मारक क्षमता विश्वव्यापी अथवा भूमंडलीय है। कोयले जैसे पदार्थों की महत्ता भी अधिक सुविधाजनक शक्ति के साधनों के उपयोग से कम हो गई है। आज कुछ अल्प खनिजों की उपलब्धि ही महत्वपूर्ण है।

चिकित्सा एवं औषधि विज्ञान की प्रगति ने जनसंख्या में आशातीत वृद्धि की है। यह वृद्धि बीमारियों एवं मृत्यु के कारणों पर चिकित्सकीय नियंत्रण होने से मृत्युदर के घट जाने के कारण हुई है। जनसंख्या दर में यह वृद्धि जनसंख्या विस्फोट का रूप ले सकती है। और राज्यों के सामने इसे नियंत्रित करना एक बड़ी समस्या के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस समस्या के तीन आयाम है, पहला माल्यूसियन आयाम कहा जा सकता है। जिसमें भय व्यक्त किया गया है, कि जनसंख्या इस अनुपात में बढ़ेगी कि खाद्य आपूर्ति संभव नहीं होगी, और भूख व पोषण की समस्यायें आयेंगी । दसरे अत्याधिक जनसंख्या के होने से खाद्यान्न व अन्य सुविधाओं से वंचित होने से कई अन्य राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक समस्यायें उठ खड़ी होंगी । राज्यों को तनावों एवं कई क्रांतिकारी परिवर्तनों का सामना करना होगा। तीसरे आयाम पारिस्थितिकीय है और समस्या के इसी आयाम को सर्वाधिक भयावह माना जा सकता है। क्योंकि जनसंख्या की वृद्धि खाद्यान्न प्राकृतिक संसाधनों, वस्तुओं एवं सेवाओं के लिये अंतत पारिस्थितिकीय व्यवस्था पर ही भार डालती है। पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने की समस्या एक राज्य की नहीं बल्कि विश्व समस्या का रूप ग्रहण कर चुकी है जिससे एक राज्य का निपटना मुश्किल है। विश्व के सभी राज्य ऐसी ही समस्याओं के समाधान हेतु प्रयासरत हो रहे हैं। विज्ञान व प्रौद्योगिकी के अविरल प्रयोग से उत्पन्न समस्याओं के समाधान भी विज्ञान व प्रौद्योगिकी में ही ढूंढने के प्रयास किये जा रहे हैं। जनसंख्या विकासशील देशों की समस्या अधिक है तथापि विकसित देश भी इसके विश्वव्यापी परिणामों से चिंतित हैं । एक ओर जहां क्षेत्रफल, दूरी, जनसंख्या इत्यादि भौगोलिक कारकी का महत्व घट गया है, वहीं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने क्षेत्र एवं जनसंख्या की दृष्टि से विशाल राज्यों के अस्तित्व को संभव बनाया है। संचार व परिगमन के साधनों ने राज्य को विशाल क्षेत्रों को नियंत्रित कर सकने की क्षमता प्रदान की है। इसी से केन्द्रीकृत्त राज्य संभव हुये हैं। जहां पैदल या घुड़सवारी के युग में छोटे–छोटे राज्य हुआ करते थे, द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त विशाल अमेरीकी व सोवियत संघ, चीन जैसे देश एवं गुट संभव हो पाये। राजनीतिक एकीकरण, यूरोपीय समुदाय या विश्व समुदाय और सरकार की संकल्पना इसी संचार क्रांति से उद्धत और संभव हुई है एक और तो राज्य की शक्ति संगठित हुई है एकीकरण बढ़ा है तो दूसरी ओर व्यक्तियों की तथ्य से आकांक्षायें भी बढ़ गई है। विकसित देशों की प्रौद्योगिक उन्नति व विकास को विकासशील देशों द्वारा प्राप्त करने की आकांक्षा ने जहां विश्व में उत्तर बनाम दक्षिण के दो समूह खड़े कर दिये हैं, विकासशील देशों में प्रौद्योगिकी विकास व उससे संबंधित उद्योग व सुविधाओं की आकांक्षा जनता में भी बढ़ी है और उसे प्राप्त न कर पाने या प्राप्त करने के लिये अग्रसर होने का प्रयास न दिखने पर ये देश अस्थिरता, तनाव व गृहयुद्ध की ओर धकेल दिये गये हैं। वहीं विकसित राष्ट्र अधिक शक्ति व विश्वास का अनुभव करते हैं। राष्ट्र निर्माण के अतिरिक्त, प्रौद्योगिकी विकासशील राज्यों द्वारा पूंजीगत सहायता के उपयोग को भी सीमित करती है । प्रौद्योगिकी औद्योगिकीकृत राष्ट्रों में पूंजी निर्माण व पूंजी का निर्यात कर सकने की क्षमताओं को पैदा करती है। ये पूंजी निर्यात व निर्माण विकासशील देशों में पूंजी निवेश की संभावनायें पैदा कर उन देशों की अर्थव्यवस्था का अनावश्यक भाग बन

जाते हैं निर्भरता इससे दृढ़ होती है। नवोपनिवेशवाद व नव साम्राज्यवाद को आगे बढ़ाने में प्रौद्योगिकी सहायक व उपकरण बनती है।

प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिकीकरण

प्रौद्योगिकी के प्रसार से विश्व पर में औद्योगिकीकरण हुआ। किन्तु औद्योगिकीकरण सर्वत्र समान नहीं रहा। औद्योगिकीकरण के लिये वित्त की व्यवस्था एवं इसे मात्र कच्चे माल के उपभोक्ता के रूप से बचाने की समस्यायें भी उत्पन्न हुई। अंतराष्ट्रीय संबंधों पर इसका प्रभाव हुआ अपेक्षाओं की क्रांतिकारी गति से वृद्धि के रूप में साथ ही विकासशील देशों में औद्योगिकीकरण के प्रसार के लिये प्रौद्योगिकी की आवश्यकता ने तनाव को जन्म दिया। यह प्रश्न महत्वपूर्ण हुआ कि किस प्रकार और कितने समय में प्रौद्योगिकी विकासशील देशों को प्राप्त हो पायेगी। परंपरागत रूप में विकासशील देशों में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण निजी उद्यमों के माध्यम से होता रहा। इन निजी उद्यमों से उत्पादनों की सतत आपूर्ति व इनके नये उत्पादनों के लिये बाजार की उपलब्धि भी सुनिश्चित रहती थी किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत सामाजिक व आर्थिक कारणों ने इसे अनुपयोगी बना दिया । प्राप्तिकर्ता देशों में इसे साम्राज्यवादी कदम के रूप में देखा जाने लगा । उत्पादक देशों के विभिन्न उद्यमी संस्थान या कंपनियां मुनाफे से ही प्रेरित होकर उत्पादन के प्रकार व आपूर्ति को निश्चित करती थी । राष्ट्रवादी आंदोलनों के कारण यह मांग उठी कि पश्चिम के इन आर्थिक क्रियाकलापों के नीति निर्माण में स्थानीय या स्वदेशी लोगों को भी सम्मिलित किया जाय। स्वतंत्र होने के बाद यह मांग और अधिक बलवती हुई किन्तु औद्योगिकीकरण पूंजी व प्रौद्योगिकी के सामुदायिक निवेश का परिणाम हैं और यदि विदेशी निवेश कर्ता को यह अधिकार नहीं मिलता कि वह निर्णय करें कि उसकी पूंजी किस रूप में उपयोग में लाई जाये तो निजी उद्यमी की रुचि समाप्त होना स्वाभाविक हैं अत इस प्रवृत्ति के साथ ही प्रौद्योगिकी के निजी माध्यमों से हस्तांतरण की संभावनायें कम हो गई । अब वैकल्पिक माध्यम मुख्य माध्यम बना और पश्चिम देशों की सरकारों द्वारा विकासशील देशों की सरकारों को प्रत्यक्ष रूप में ही प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संभव हुआ। इसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के दुद्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सहायता व अनुदान कार्यक्रम प्रारंभ हुये। किन्तु प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की आवश्यकता पहचानने भर से प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण संभव नहीं हुआ। प्रौद्योगिकी आसात करने की दीर्घकाल आवश्यकताओं के साथ ही लघुकालीन राजनीतिक बाध्यतायें भी दोनों देशों के मध्य उठ खड़ी हुई क्योंकि सरकारी स्तर पर प्रौद्योगिकी और पूंजी हस्तांतरण को सार्वजनिक राजस्व के व्यय के साथ जोड़कर देखा जाने लगा। एक और अनुदान दाता देश द्वारा यह प्रयास किया जाने लगा कि प्रौद्योगिकी का उपयोग उसकी शर्तों के अनुसार हो वहीं प्राप्तकर्ता देश में यह प्रयास रहा कि सही प्रौद्योगिकी का उपयोग उन्हीं क्षेत्रों में हो जहां यह उसके आर्थिक विकास के लिये सर्वाधिक लाभप्रद रह सके । द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् दो दशकों तक तो पूंजी व प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का कार्यक्रम कम समस्यामूलक रहा किन्तु सत्तर के दशक के आते आते जहां नव स्वतंत्र देशों ने आर्थिक विकास के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता को अर्थहीन माना, वहीं पश्चिम विकसित देशों विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में वित्तीय संकट ने इन देशों को विश्व स्तरीय विकास के स्थान पर स्वकेन्द्रित विकास के प्रति अधिक चिंतित बना दिया। 1973 में तेल संकट और पैट्रोलियम निर्यातक देशों के समूह आपके द्वारा पेट्रोल की कीमतें चार गुना बढ़ायी जाने से भुगतान संतुलन की नयी समस्यायें खड़ी हुई । गुट निरपेक्ष एवं विकासशील देशों द्वारा सहृदयता से विकासशील देशों की सहायता की मांग जोर पकड़ने लगी वहीं विकसित देश अधिक सचेत व स्वकेन्द्रित होते गये। उदार व्यापार नीति व विकासशील देशों को उदारतापूर्वक सहायता में कमी आने लगी। उत्तर–दक्षिण के बीच अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव को उदारतापूर्वक सहायता में कमी आने लगी। उत्तर–दक्षिण के बीच अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव इसी दौर में स्पष्ट हुआ। शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात यह विभाजन और प्रगाढ़ हुआ और विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों पर दबाव बढ़ाया कि वे अपनी राष्ट्रीय सीमाओं को खोल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को अबाध बनायें एवं संरक्षणवादी प्रवृत्तियां छोड़ें। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना ने इस दबाव को और सशक्त बनाया वही विकासशील देशों में इसे नव साम्राज्यवाद निरूपित करते हुये अपने आर्थिक हित, संस्कृति इत्यादि के प्रति नयी चेतना विकसित हुई । ऊर्जा शक्ति के साधन आर्थिक विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक होते हैं यह उत्पादन के लिये शक्ति प्रदान करते हैं। चाहे वह प्राथमिक औद्योगिक उत्पादन हो अथवा अत्याधुनिक उत्पादन हो। यह ऊर्जा शक्ति पारंपरिक तौर पर कोयला प्राकृतिक गैस, जल एवं खनिज तेल से प्राप्त होती हैं। इनमें खानिज तेल अधिकाधिक व सर्वाधिक उपयोग में आने वाली शक्ति है। जब तक खनिज तेल के विकल्प के रूप में कोई शक्ति का साधन विकसित नहीं हो जाता, तेल उत्पादक देश विश्व राजनीति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बने रहेंगे। शक्ति उत्पादन में प्रौद्योगिकी प्राथमिक कारक है। शक्ति के साधन की उपलब्धता प्रौद्योगिकी के द्वारा इस शक्ति के उपयोग की आवश्यकता को पैदा करती है। आर्थिक आधुनिकीकरण, कुछ अर्थों में शक्ति के साधन का

उत्पादन व सक्षम उपयोग ही है। राज्य शक्ति भी कुछ सीमा तक इसी ऊर्जा शक्ति की प्राप्ति व उपयोग पर निर्भर है। यह विकासशील देशों में शक्ति के लिये नयी मांग के रूप में दिखता है तो विकसित देशों में निरंतर एवं बढ़ती हुई मांग के रूप में देखा जा सकता है । तेल उत्पन्न करने वाले देशों द्वारा अपने महत्व को पहचाने जाने के पश्चात वे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एवं अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में नये एवं संवदेनशील मुद्दे पैदा करते रहे हैं। तेल उत्पादक देशों का प्रयास रहा कि अपने इस बहुमूल्य पदार्थ के जरिये दे अधिक से अधिक राजनीतिक लाभ एवं इस शक्ति के उपयोग से जनित आर्थिक लाभ का बड़ा भाग प्राप्त करें । वहीं विकसित देश विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रयास रहा कि वह इन तेल उत्पादकों को मनमानी न करने दे। शीत युद्ध के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव का सर्वाधिक प्रमुख बिन्दु यही क्षेत्र हैं।

प्रसारित व विस्तृत होती हुई औद्योगिक प्रौद्योगिकी का एक पक्ष यह भी है कि यह सामान्यतः अंतर्निर्भरता उत्पन्न करती है। अधिक प्रौद्योगिकी एवं अधिक औद्योगिक उत्पादन का अर्थ है कि अधिक राज्यों को विभिन्न कच्चे मालों का आयात करना होगा। यह व्यापार को प्रोत्साहन देता है परंतु आवश्यक नहीं है कि तेल की तरह ही अन्य कच्चे मालों का इस्तेमाल राजनीतिक हथियार के रूप में किया जा सके। प्रौद्योगिकी के प्रसार का एक अन्य पक्ष यह है कि सस्ते श्रम मूल्यों वाले क्षेत्रों में इसके उपयोग से कम लागत की निर्यातक वस्तुएं प्राप्त की जा सकती है। ये पुराने औद्योगिकृत देशों से प्रतिस्पर्धा कर अपना स्थान बना सकती हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अमेरिका द्वारा पुर्ननिर्माण व पुररोद्धार के लिये यूरोप के देशों को पूंजी व प्रौद्योगिकी हस्तांतरित की गई जिसने विश्व बाजार में यूरोप का प्रतिस्पर्धा में खास स्थान बनाया एवं इसकी सैनिक एवं औद्योगिक शक्ति में भी वृद्धि हुई।

प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण

आर्थिक विकास व औद्योगिकीकरण के लिये प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास एवं उपयोग ने संपूर्ण मानव जाति के लिये समस्या पैदा कर दी है। यह समस्या है पर्यावरण संरक्षण की। भूमण्डलीय उष्णता में वृद्धि ओजोन सतह में छिद्र, हरित गैसों की रिसावट के मुद्दों ने इस और ध्यान आकर्षित किया कि अंधाधुंध विकास द प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते जाना मानव सभ्यता के लिये विनाशकारी हो सकता है। विकास को धारणीय विकास एवं सतत बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि जो प्रौद्योगिकी उपयोग में लाई जाये वह पर्यावरण के अनुकूल हो, उसे हानि पहुंचाने वाली न हो। 1992 के रियो पृथ्वी सम्मेलन में पर्यावरण संरक्षण के लिये कार्बन की मात्रा में कमी व इस हेतु विकसित राष्ट्रों द्वारा सकल राष्ट्रीय उत्पाद का 0.7 प्रतिशत खर्च करना स्वीकारा गया है। किन्तु 1997 में क्वोटों में हुये सम्मेलन तक यह स्पष्ट हो गया कि विकसित राष्ट्रों द्वारा पर्यावरण संरक्षण का यह प्रतिशत 0.3 तक गिर गया है और वे इसे बढ़ाने में रूचि नहीं रखते हैं। विकासशील देशों को विकास के साथ–साथ पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाने वाली प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिये भी विकसित देश सहानुभुतिपूर्ण रवैया नहींरखते। प्रदूषण फैलाने वाली पुरानी प्रौद्योगिकी के स्थान पर नवीन प्रौद्योगिकी के लिये विकासशील देश विकसित राष्ट्रों पर निर्भर है। विकासशील देशों का दृष्टिकोण है कि पर्यावरण की अधिक हानि विकसित देशों के कारण ही पहुंची है और पर्यावरण संरक्षण के लिये भी इन्हीं देशों को आगे आना चाहिये । विकसित देशों में ब्रिटेन व जर्मनी जैसे यूरोपीय देशों ने 2010 कार्बन डायआक्साइड के वायु में रिसाव की 1990 के स्तर से भी कम करने की कोशिश की है किन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका ऐसा करने में असफल रहा है। जहां ये देश चाहते हैं कि दुनिया के कुछ ही भागों में बचे उष्ण कटिबंधीय वनों को अब न काटा जाये, विकासशील देश कुछ आवश्यक परियोजनाओं के लिये इस बंधनों को न लगाने की मांग करते हैं, यही कारण है कि जहां 1991 में 11,000 वर्ग कि.मी. की दर से जंगल नष्ट हो रहे थे यह दर घटने की बजाय 1995 तक 15.000 वर्ग कि. मी. तक पहुंच चुकी थी । शस्त्रास्त्रों, प्रदूषण, पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों की खपत पूर्व चिकित्सा औषधि विज्ञान की प्रगति से जनसंख्या की समस्या आदि विश्व समस्यायें तीव्र गति के परिवर्तनों के युग में पैदा हुई हैं, जिन्हें एल्विन टॉफलर ने फ्यूचर शॉकश या श्भविष्य के आघात कहा है। कई क्षेत्रों में ये परिवर्तन मानवता के अस्तित्व के एवं गुणात्मकता के लिये चुनौती बन चुके हैं। प्रदूषण की समस्या सभी पक्षों से संबंधित है और इसने विश्व में संपन्न व विपन्न के बीच की खाई को और अधिक प्रखर किया है। उपरोक्त समस्याओं को विकसित व विकासशील राष्ट्र भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं अतरू विश्व समस्या के समाधान के तिये इच्छित सहयोग विकसित नहीं हो पाता है। नवीन अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था हो या संयुक्त राष्ट्र की समुद्री विधि सम्मेलन हो । धन व विकास, भूतपूर्व औपनिवेशिक संबंध, वर्चस्व और निर्भरता के तत्व इसे और अधिक जटिल बनाते हैं साथ ही संसाधनों के वितरण एवं उपभोग की असमानता को बढ़ाते हैं। विकासशील देश भी औद्योगिक व विकसित होना चाहते हैं और इस हेतु उन्हें संसाधनों ऊर्जा, पूंजी व प्रौद्योगिकीय सहायता की आवश्यकता होती है। विकास की इस प्रक्रिया में वे भी बड़े पैमाने पर प्रदूषण पैदा करेंगे। उन के दृष्टिकोण में विकसित देश उन्हें अल्प विकसित, नव औपनिवेशक एवं

गौण अवस्था में रखना चाहते हैं। यह आरोप उस अवस्था में अधिक तीव्र हो उठता है जब पर्यावरण के मुद्दों पर विकासशील देशों से यह कहा जाना है कि उन्हें विकसित राष्ट्रों के समान विकास नहीं करना चाहिये, यह जानते हुये भी कि ऐसा करने से अमीर व गरीब देशों के मध्य विषमता और भी बढ़ेगी। विकासशील देशों का मत है कि उनके विकास लक्ष्यों को कम करना अनुचित हैं और वह गरीब देशों को अधिक अलाभकारी स्थिति में रखेगा।

प्रौद्योगिकी एवं अंतर्निर्भरता

प्रौद्योगिकीय विकास ने अंतर्निर्भरता को प्रगाढ़ किया है। जनसंख्या के आकार व संरचना, प्राकृतिक संसाधनों के विनिधान को भी प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व प्रौद्योगिकी ने औद्योगिक व्यवस्था में परिवर्तन, सूचना के युग, उत्तर–औद्योगिक समाज, टेक्नोक्रेटिक युग.. माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक क्रांति लाकर व्यक्ति की उद्देश्य प्राप्ति, आवश्यकता पूर्ति व मामलों के निपटारे में क्षमताओं में आशातीत वृद्धि की है। प्रौद्योगिकी ने सूचना व ज्ञान अर्जन एवं हेराफेरी में भी क्षमताओं को भौतिक वस्तुओं को उत्पन्न करने की क्षमता के मुकाबले कई गुना बढ़ाया है। इससे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिससे सामाजिक जीवन के कर्णधार के रूप में निर्माण उद्योग का स्थान सेवा उद्योग ले रहा है। प्रौद्योगिकी ने ही भौगोलिक और सामाजिक दूरियों को जेट शक्ति वाले विमानों, कम्प्यूटर, उपग्रहों व अन्य आविष्कारों के माध्यम से कम करके व्यक्ति, विचार व वस्तुओं को अत्यंत तीव्र गति से स्थान व समय के पार जाने में सहायता की है। प्रौद्योगिकी ने कम समय में अधिक कार्य करने की क्षमता भी व्यक्ति को दी हैं और स्थानीय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय समुदायों की अंतर्निर्भरता में पूर्व से कई गुना अधिक वृद्धि की है। समाज, अर्थव्यवस्था व राजनीति सभी को प्रौद्योगिकी ने प्रभावित किया है। डेनियल बेल, पीटर इकर, जॉन निस्वेट, डेनियल एंकोलोविच आदि विद्वानों ने राष्ट्रीय व्यवस्था के अंतर तत्वों परिवार विवाह, कार्य, यूनियनों, व्यवसाय, आराम, कृषि उत्पादकता, ह निर्माण, चुनावी राजनीति व अन्य सभी जीवन पक्षों में आ रहे परिवर्तनों की व्यापकता व महत्व को समझा व प्रकाश डाला है। इन्हीं तत्वों से अंतर्निर्भरता को व्यापक बना विश्व राजनीति की संरचना व प्रक्रिया को परिवर्तित कर दिया है। व्यक्ति राज्य की संरचना के परे जाकर उद्देश्य पूर्ति व हित संवर्धन के लिये सक्षम हो रहा है। राष्ट्र राज्य की क्षमता, महत्व व प्रासंगिकता में कमी आई है। इससे राज्य की संप्रभुता भी प्रभावित हुई है और बहुराष्ट्र कंपनियों जैसे गैर राज्यीय संगठनों की शक्ति में वृद्धि हुई है। वे विश्व स्तर पर राज्य के साथ अंतक्रिया कर तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप को प्रभावित कर रहे हैं और इसी कारण से अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जो राज्यों के मध्य राजनीति मानी जाती थी, राज्य का स्थान एकमात्र कर्ता के रूप में नहीं रह गया है। विश्व राजनीति विश्लेषण का राज्य केन्द्रित के साथ ही बहु केन्द्रवादी दृष्टिकोण भी इसी कारण से विकसित हुआ है।

संचार एवं प्रौद्योगिकी

प्रौद्योगिकी ने संचार के दो आयामों को अत्यधिक प्रभावित किया है। एक तो सूचनाओं की मात्रा (वोल्यूम) और दूसरा सूचनाओं के आदान–प्रदान की गति। इन दोनों ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के राजनयिक पक्ष, शक्ति एवं प्रोपेगेण्डा पर दूरगामी प्रभाव डाला है। अन्य राज्यों की जनता से इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से सीधा संपर्क कर आव्हान किया जा सकता है और इसके लिये उस राज्य की सरकार की अनुमति आवश्यक नहीं की ली जाये । अधिक प्रभाव डालने के लिये उच्च स्तर के सरकारी अधिकारियों द्वारा आव्हान किया जा सकता है। तीव्र गति से प्रीटिंग की सुविधा ने प्रोपेगेण्डा का ऐसा शक्तिशाली माध्यम उत्पन्न कर दिया है जो एक शताब्दी पहले प्राप्त नहीं था रेडियो एवं टेलीविजन के अविष्कारों से एक राज्य दूसरे राज्य के नागरिकों को अधिक आसानी से प्रोपेगेण्डा द्वारा प्रभावित कर सकता है। अब ऐसा करने के लिये लक्षित व्यक्तियों के साक्षर होने की आवश्यकता भी नहीं है। संचार का एक अन्य प्रभावशाली परिणाम संपूर्ण विश्व के राज्यों की गोपनीयता बनाये रख सकने की संभावनाओं को कम कर दिया है। सेटेलाइट या उपग्रह, मिनिभेचर इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की सुविधा ने दूरस्थ प्रदेशों के एकांत व रहस्य को समाप्त कर दिया है, राज्यों की गतिविधियाँ छुपी नहीं रह सकती । गोपनीय राजनय भी इसी करण संभव नहीं रहा है। ये विकास राजनय की प्रकृति को परिवर्तित कर राज्य व व्यक्ति के क्रियाकलापों पर नयी सीमायें एवं नयी मागे लाद रहे हैं जिससे अंतर्राष्ट्रीय संबंध में कल्पना परे प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। संचार माध्यमों के जरिये विश्व जनमत का निर्माण आसान हो गया है जो राज्यों के क्रियाकलापों पर सीमा आरोपित करता है।

प्रौद्योगिकी एवं विदेश नीति

प्रौद्योगिकी का प्रभाव विदेश नीति पर भी व्यापक रूप से हुआ है। प्रौद्योगिकी विदेश नीति का उपकरण एवं कारक दोनों ही है। हालांकि विश्व राजनीति पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव को माप सकने वाला पैमाना नहीं है, क्योंकि प्रौद्योगिकी विदेश नीति का साधन है साध्य नहीं। अतः विदेश नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये यह एक यंत्र है तो कारक भी। वैज्ञानिक ज्ञान व तकनीक का हस्तांतरण विदेश नीति के उपकरण के रूप में प्रौद्योगिकी का प्रत्यक्ष उपयोग है। मार्शल योजना, अमरीकी चार सूत्रीय तकनीकी सहायता कार्यक्रम विकासशील देशों के विद्यार्थियों को विकसित देशों की शैक्षणिक संस्थाओं में एक्सचेंज का कार्यक्रम के अंतर्गत भेजा जाना सभी राज्य के हितों की अभिवृद्धि के लिये किये जाने वाले प्रयासों में सम्मिलित हैं। कुछ प्रौद्योगिकी सरल प्रकृति की होती है। जैसे कृषि प्रौद्योगिकी जिसमें खाद्यान्न की नई किस्में पैदा करना, भले ही जटिल हो पर इसका उपयोग व परिणाम आसानी से प्राप्त हो जाते हैं । और अतिरिक्त प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती है। जटिल प्रौद्योगिकी जिसमें परिष्कृत उत्पादक सुविधायें सम्मिलित हैं, को बनाये रखने के लिये सतल एवं बड़े पैमाने पर प्रयास किये जाने आवश्यक होते हैं। ये सिर्फ विकसित व धनी देशों द्वारा किया जाना संभव है । विश्व के विकासशील देश विकसित देशों पर ऐसी प्रौद्योगिकी के लिये निर्भर है। किन्तु विकसित देशों की घरेलू बाध्यताएं सतत व दीर्घकालीन प्रौद्योगिकी सहायता के स्थान पर एक ही बार दिये जा सकने वाले कार्यक्रमों पर अधिक केन्द्रित होती है। उनके विदेशी सहायता कार्यक्रमों में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है, क्योंकि आधुनिक प्रौद्योगिकी विकास मानव शक्ति व संसाधनों के संदर्भ में अत्यन्त ही जटिल व महंगा है ।

प्रौद्योगिकी ने विदेश नीति की परंपरागत विषय वस्तु को भी प्रभावित किया है । तकनीकी सहायता किसी भी देश द्वारा दी जाने वाली अथवा ली जाने वाली सहायता अनुदान कार्यक्रमों का अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है। यह स्त्रांतजिक सूचना, उपग्रह प्रेक्षण से लेकर इलेक्ट्रोनिक मोनिटरिंग तक व्यापक हो गई है। इसके अंतर्गत सूचना आदान–प्रदान नये विषय के रूप में राजनय व विदेशनीति में सम्मिलित हैं। इसी प्रकार नये अंतर्राष्ट्रीय कानून को भी नित नये विषयों से संबद्ध होना होता है। बाह्य अंतरिक्ष, समुद्र की गहराई व समुद्र तल जैसे विषयों को प्रौद्योगिक विकास के कारण ही अंतर्राष्ट्रीय कानून में सम्मिलित करना पड़ा व पारंपरिक संकल्पनाओं को व्यापक व नवीन बनाना पड़ा ।

प्रौद्योगिकी ने विदेश नीति के संचालन की पद्धति को भी परिवर्तित कर दिया है। राष्ट्राध्यक्षों व शासनाध्यक्षो द्वारा व्यक्तिगत राजनय इसी शताब्दी में और प्रौद्योगिकी विकास संचार व परिगमन के कारण ही संभव हुआ। संचार क्रांति के कारण एक राज्याध्यक्ष अपनी राजधानी में रहते हुये भी विदेशों से संपर्क रख सकता है । और विदेश यात्रा पर होने के बावजूद देश व राजधानी के संपर्क में रह सकता है। संचार साधनों में मीडिया के विस्तार ने प्रत्येक राष्ट्र को भेदय बना डाला है और राजनय को भी इतना प्रभावित कर दिया है कि राजनय के पुराने नियमों को परिवर्तित करना पड़ा। गुप्त राजनय की समाप्ति हुई। प्रौद्योगिक विकास सूचना मीडिया व इंटेलीजेंस प्रौद्योगिकी ने आज गुप्त बैठकों को असंभव बना दिया है। और सारे विश्व में सूचना प्रवाह को भी अत्यंत सहज बना दिया है। जहां कोई भी घटना सारे विश्व में कुछ ही घंटों में प्रासंगिक व प्रसारित हो जाती है। विदेश स्थिति राजदूत को कार्य निष्पादन में आज पहले के समान स्वतंत्रता व अधिकार प्राप्त नहीं है। इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यमों व हवाई यातायात ने यह संभव बना दिया है कि वे एक स्थान से दूसरे स्थान तेजी से जा सकते हैं और अपने देश के राष्ट्राध्यक्ष या शासनाध्यक्ष से सीधे संपर्क स्थापित कर निर्देश प्राप्त कर सकते हैं। अब उनके बुद्धिचातुर्य व कौशल के लिये अधिक स्थान नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रेस साक्षात्कार एवं रेडियो व दूरदर्शन पर संदेशों को भी वही महत्व प्राप्त होने लगा है जो पूर्व में राजनयिक टिप्पणियों व व्यक्तिगत वार्ताओं को प्राप्त था। आज कुशल राजनयिक को तकनीकी जानकारी रखने वाले स्टाफ को रखना अत्यंत आवश्यक हो गया। है क्योंकि तभी राजनयिक संबंधों में सैनिक व तकनीकी पक्षों का सफलतापूर्वक संचालन किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी एवं संस्कृति

प्रौद्योगिकी संस्कृति का अभिन्न अंग है। जहां किसी समुदाय की संस्कृति प्रौद्योगिकी तकनीक को विकसित करने की क्षमता को निर्धारित करती है वहीं नयी प्रौद्योगिकी के प्रयोग का प्रभाव संपूर्ण संस्कृति पर होता है पाषाण युगीन सभ्यता में लकड़ी व पत्थर का प्रयोग करने वालों की संस्कृति व कृषि एवं पशु पालन करने वाली सभ्यता में अंतर स्पष्ट है। इसी प्रकार प्रौद्योगिकी के उपयोग से समूह व समय के अंतर को मानव विज्ञान शास्त्री भी रेखांकित करते हैं। लेखन की तकनीक व बड़े पैमाने पर संचार की तकनीक ने भी सभ्यता पर प्रभाव डाला है। आवागमन की तकनीकों में घोड़े के उपयोग से लेकर हवाई

जहाज तक की सभ्यताओं में अंतर स्पष्ट है। तकनीक एवं प्रौद्योगिकी ही वह आधार है जिस पर अर्थ–व्यवस्था का प्रकार निर्भर होता है। प्रौद्योगिकी का विकास एक स्थान पर सीमित नहीं रहता उसका प्रसार व उपयोग की आकांक्षा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करती रही है। नाविक शक्ति एवं वाष्प शक्ति के अविष्कार ने जहां इंग्लैण्ड और फिर यूरोप में उत्पादन के वृहद साधनों को जन्म दिया वहीं इस पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने नये बाजारों की खोज के लिये उपनिवेश को भी जन्म दिया। उप निवेशों में चाहे छोटे समूहों में ही सही एशिया व अफ्रीका में यूरोपीय सभ्यता को सराहने वाला वर्ग उठा, उसी प्रकार विश्वीकरण द्वारा समान अर्थ–व्यवस्था व व्यापार का विश्व के संपूर्ण देशों में आरोपण राष्ट्रीय सीमाओं के खुलने के साथ ही सांस्कृतिक प्रहार के रूप में के संपूर्ण देशों में आरोपण राष्ट्रीय सीमाओं के खुलने के साथ ही सांस्कृतिक प्रहार के रूप में दिखाई देता है। सैटेलाइट व केबल रूपी नये माध्यमों से विशिष्ट प्रकार की संस्कृति का आरोपण भी दिखाई देता है। एक देश के साम्राज्यवादी साधन के रूप में प्रौद्योगिकी का प्रयोग सर्वोत्तम रूप में चिरस्थायी हो सकता है, यदि उस समाज में इसके उपयोग की आवश्यकता पैदा कर दी जाये। आज लुभावने विज्ञापनों के माध्यम से यह आवश्यकता पैदा की जा रही है। विज्ञापनों का प्रभाव जहां पहले सीमित था आज प्रत्येक घर में दूरदर्शन के माध्यम से दिखाई जाने वाली संस्कृति को अपनाने का प्रलोभन बढ़ रहा है। वही इन देशों की सरकारों पर विकास एवं नवीन तकनीकों के अपनाने की आकांक्षाओं का दबाव भी बढ़ रहा है। अतरू विश्वीकरण एवं सांस्कृतिक साम्राज्यवाद ने प्रौद्योगिकी का स्थान महत्वपूर्ण है। शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात की विश्व व्यवस्था की कल्पना करते हुये प्रसिद्ध विद्वान सेमुअल हंटिंगटन ने माना कि विश्व में आमामी संघर्ष सभ्यतओं में संघर्ष होगा। 1985 के उपरांत सोवियत संघ एवं पूर्वी यूरोप के देशों कई घटनाओं ने प्रजातीयता के महत्व को स्थापित किया। विचारधारागत संघर्ष की समाप्ति एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में नयी प्रवृत्तियों व नये आयामों ने विश्वीकरण को बढ़ावा दिया। विश्वीकरण ने एकरूपता लाने, राष्ट्रवाद को कमजोर करने विश्ववाद व समान संस्कृति थोपने का प्रयास किया। प्रौद्योगिकी ने आर्थिक विकास तो किया परन्तु बाजारों खोज व आर्थिक क्रियाकलाप ने संप्रभुता व राष्ट्रवाद को कमजोर कर दिया। विश्वीकरण की प्रक्रिया में जहां समस्त विश्व में अनवरत व्यापार एवं राष्ट्रीय सीमाओं के ह्रास की चर्चा हुई वहीं राष्ट्रीय सीमाओं में अब तक सुरक्षित संस्कृति पर आघात की चर्चा भी की जाने लगी और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का प्रश्न उठाया जाने लगा है। परिणामस्वरूप आज विश्वीकरण विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृति को चुनौती दे रहा है। तो विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृति भी विश्वीकरण को चुनौती दे रही है एवं उदारवादी रूपी संस्कृति को अपनाने से पूर्व परख रही है ।

निष्कर्ष :

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विकासशील देशों को विकास की संभावनाएं प्रस्तुत करती हैं। तो विकसित देशों को नवोपनिवेशवाद की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने औद्यागिकीकरण का रास्ता दिखाया, बाजारों एवं कच्चे माल के लिये विश्व में अंतनिर्भरता पैदा की। प्रौद्योगिकी ने दूर स्थित राज्यों के मध्य भी सैनिक संघर्ष को संभव बनाया है और राज्य आज अधिक भेदय हो गया है। सीमाओं की अभेदता अप्रासंगिक हो गई है। इलेक्ट्रॉनिक संचार कम कीमतों व अधिक मात्रा में सूचना प्रवाह संभव बनाता है और जितनी समस्याओं को कम करता है। उतनी पैदा भी करता है। प्रौद्योगिकी ने राष्ट्र राज्य की शक्ति की अवधारणा एवं तत्वों में परिवर्तन ला दिया है। प्रौद्योगिकी ने भी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को वर्तमान गत्यात्मकता प्रदान की है। मानवीय क्रियालापों की यह एक ऐसी विद्या सिद्ध हुई है जिसने सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीयता का प्रमाण देते हुये राष्ट्रीय सीमाओं एवं संप्रभुता के महत्व को सीमित कर दिया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. महेन्द्र कुमार, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष (आगरा, 1984)
2. नार्मन डी. पामर एवं होवर्ड डी पकिंज, इन्टरनेशनल रिलेसन्ज, (कलकत्ता, 1970)
3. जॉन बेलिस एवं स्टीव स्मीथ, सम्पा०, ग्लोबलाईजेसन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स (न्ययार्क, 2002)
4. अनीकचटर्जी, इन्टरनेशनल रिलेसंज टूडे (दिल्ली, 2010)
5. रूमकी बासु, सम्पा०, इन्टरनेशनल पॉलिटिक्स : कन्सेपटस, थ्यौरिज एण्ड इश्यूज, (सेज, 2012)
6. क्रिस्टीयन रूसेमित एवं डंकन एनीडल, सम्पा०, दॉ ऑक्सफोर्ड हेंडबुक ऑफ इन्टरनेशनल रिलेसंज, (ऑक्सफोर्ड यूनि. प्रैस, 2010)
7. हेराल्ड एवं मगिरट स्प्राउटः टुवर्डस ए पोलिटिक्स ऑफ दी प्लेनेट अर्थ
8. इ. एल. मोर्स : मॉडर्निज्म एण्ड दी ट्रांसफार्मेशन ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स
9. पेडेलफोर्ट, लिंकन एवं आल्वी : दी डायनामिक्स ऑफ इंटरनेशनल पोलिटिक्स
10. स्टेफान जॉजिनी एवं जे पोर्नेल :दी स्ट्राटजी ऑफ टेक्नोलॉजी
11. स्कोलनिकोफ : दी इंटरनेशनल इम्पेटिव्हस ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड डेवलपमेंट एण्ड दी इंटरनेशनल पोलिटिकल सिस्टम